इकाई 11 आख्यानपरक लेखन

इकाई की रूपरेखा

11.0 उद्देश्य
11.1 प्रस्तावना
11.2 आख्यानपरक लेखन
  11.2.1 सरलता
  11.2.2 प्रत्यक्ष वार्तालाप शैली
  11.2.3 तथ्यपरकता
  11.2.4 वैयक्तिकता
  11.2.5 शैली
11.3 आख्यानपरक रचना का लेखन
  11.3.1 विचार
  11.3.2 विषय का चुनाव
  11.3.3 विषय का विकास
  11.3.4 विषय-सामग्री की खोज़
11.4 सारांश
11.5 शब्दावली
11.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

11.0 उद्देश्य

आख्यानपरक लेखन के बारे में जानकारी देना इस इकाई का उद्देश्य है। इस इकाई में आपको आख्यानपरक लेखन के लिए विषय का चुनाव और इसके समुचित निर्वाह की पद्धति का ज्ञान प्राप्त हो सकेगा जिससे आप अच्छा से अच्छा आख्यान लिखने में समर्थ होंगे।

11.1 प्रस्तावना

जब आप किसी मशहूर कलाकार का गायन सुनते हैं अथवा बैडमिंटन, क्रिकेट या हॉकी आदि खेल देखते हैं तो आपके मन में यह इच्छा उत्पन्न होती है कि काश आप भी वैसा ही गा अथवा खेल सकते। लेकिन जैसा कि आप जानते हैं, गायक अथवा खिलाड़ी दिन प्रतिदिन अपनी कला का अभ्यास करता है और तब जाकर वह इस लायक बन पाता है कि लोगों के सामने अपनी कला का प्रदर्शन कर सके। यह पूरी तरह अभ्यास से ही सम्भव हो पाता है। लेखन इसका अपवाद नहीं है। अगर आप अच्छा लिखना चाहते हैं तो आपको इसका निरंतर अभ्यास करते रहना पड़ेगा। अच्छा लेखन प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति के लिए जरूरी भी है। इस इकाई का प्रमुख उद्देश्य आपके विचारों भावनाओं और प्रतिक्रियाओं को स्पष्ट और प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्ति का अभ्यास कराना है। आम तौर से व्यक्ति दो वर्ष की उम्र में बोलना और पाँच-छ : वर्ष की उम्र में लिखना सीख ही जाता है। कुछ विद्यार्थी स्नातक स्तर पर पहुँचकर इस दिशा में गंभीर प्रयास शुरू करते हैं और वह भी तभी संभव है जब वे अपने दिमाग को रचनात्मक दिशा में मोड़ सकें। किसी विशेष अवसर पर की गई रचना अथवा पत्र वास्तव में आख्यानपरक लेखन को गंभीरता प्रदान नहीं कर पाते, विशेष रूप से तब, जब प्रायः व्यक्ति के मन में यह बात स्पष्ट नहीं होती कि वह अपने विचारों को किस तरह प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करे। इस स्तर पर व्यक्ति स्वयं को आख्यान लेखन के लिए सक्षम अनुभव नहीं कर पाता। इसलिए लेखन प्रविधि को सीखने का एक मात्र उपाय लेखन का अभ्यास करना ही रह जाता है जैसे तैरने की कला बिना पानी में गए नहीं आ सकती। लेखन की कला सीखने के लिए दो बातों की विशेष आवश्यकता पड़ती है - पहली शर्त है साक्षरता और दूसरी अभिव्यक्ति की क्षमता या कौशल। इस तरह, आख्यानपरक लेखन के लिए आवश्यक है कि - व्यक्ति में शब्दों और वाक्य संरचना की मौलिक या बुनियादी क्षमता होनी चाहिए जो आम तौर पर स्वीकृत मानदण्डों के अनुरूप हो, उसमें आख्यान की क्षमता हो, घटनाओं मे सही संगति बैठाने की कला आती हो और विचार एवं भावना की अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में भाषा का उपयोग करने की योग्यता रखता हो। लेखन सभी के लिए एक कठिन कार्य है। इसलिए लेखन का निरंतर अभ्यास ही व्यक्ति को कुशल लेखक बनने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

11.2 आख्यानपरक लेखन

अपनी संवेदना, अनुभूति और भावों को व्यक्त करने के लिए ही मनुष्य ने सबसे पहले भाषा, और लिपि का आविष्कार किया। कुछ प्रौढ़ता आने पर उसने अभिव्यक्ति के नए-नए तरीके भी ढूँढ निकाले। आख्यान भी मनुष्य की लेखन-कला का एक माध्यम है। वैयक्तिक लेखन, आख्यानपरक लेखन मनुष्य की संवेदनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम हैं।

वैयक्तिक लेखन में जहाँ व्यक्तिपरकता पर विशेष बल दिया जाता है वहीं आख्यानपरक लेखन में व्यक्तिपरकता के साथ-साथ वस्तुनिष्ठता भी झलकती है। आख्यानपरक लेखन में भावों और विचारों को लेखक चरित्रों के माध्यम से व्यक्त करता है और बीच-बीच में सीधे-सीधे अपनी बात कहने लगता है जबकि वैयक्तिक लेखन में लेखन की अनुभूति और विचारों के बीच चरित्रों के लिए कोई जगह नहीं होती। इसमे तो लेखक अपनी स्मृति के आधार ही घटनाओं या व्यक्तियों का वर्णन करता चलता है।

आख्यानपरक लेखन में चरित्रों के विकास और स्थितियों का वर्णन करते समय लेखक सच्चाई को दिखाता चलता है। यह सच्चाई उस घटना विशेष या व्यक्ति विशेष की भी हो सकती है और पूरे समाज की भी। इस तरह आख्यान में व्यक्ति और घटनाओं के साथ सामाजिक सत्य का भी उद्‌घाटन होता है। जबकि व्यक्तिपरक लेखन में ऐसा होना कोई जरूरी नहीं है। इसमें लेखक ज्यादातर अपने बारे में ही बात करता है अर्थात् उसके जीवन में पहले जो घटनाएँ घट चुकी हैं जिन व्यक्तियों से उसका बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है, उनके बारे में ही वह अधिकतर बातें करता है। इस प्रकार वैयक्तिक लेखन में जहाँ लेखक के निजी जीवन की अनुभूति प्रधान होती है, वहीं आख्यान में निजी जीवन के साथ समाज की व्यापक जिंदगी के चित्र भी अंकित होते हैं।

11.2.1 सरलता

समाचार पत्रों में जिस भाषा का प्रयोग किया जाता है, सरलता उसका आवश्यक गुण है। सरल भाषा के प्रयोग से पाठक को समझने में कोई परेशानी नहीं होती क्योंकि ऐसी भाषा में कल्पना का सहारा नहीं लिया जाता। इस तरह पाठक ऐसे आख्यान को पढ़ने या समझने के दिमागी कसरत करने से बच जाता है। कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं -

> **कुछ लोग मानते हैं कि गुलदाउदी प्रजाति का मूल स्थान भारत है, जबकि कुछ लोगों का कहना है कि मूल रूप से यह चीनी है। जो भी हो, जापान ने इस प्रजाति के संवर्धन की दिशा में काफी काम किया। भारत में दक्कन, कलकत्ता सहित अनेक स्थानों में इस प्रजाति के फूल उगाए जाते हैं। संस्कृत में इसे सेवंती और बंगाली में चन्द्रमाल्लिका कहा जाता है। महाराष्ट्र में इसे श्रावंती और दक्षिण में चावंती के नाम से पुकारा जाता है।**
>
> (28/11/99 - नवभारत टाइम्स)

उपर्युक्त उदाहरण से यह स्पष्ट हो जाता है लेखक गुलदाउदी प्रजाति के फूल के जन्म स्थान और विभिन्न प्रांतों में उसके अलग-अलग नामों के बारे में बताना चाहता है। ध्यान रखने की बात यह है कि इसमें कहीं उलझाव नहीं है और लेखक जो बात कहना चाहता है पाठक तक सम्प्रेषित होने में उसे कोई कठिनाई नहीं होती।

> **न्यायालय ने पाकिस्तान के जवाब के बाद भारत की दलील के लिए आगामी 28 फरवरी की तिथि मुकर्रर की है। सभी चेतावनियों की अनदेखी कर भारतीय क्षेत्र में घुस आए पाकिस्तानी विमान में सवार सभी 16 व्यक्ति मारे गए थे। पाकिस्तान का दावा है कि विमान उसके ही क्षेत्र में था। उसका आरोप है कि भारत ने इस मामले में कई दायित्वों का उल्लंघन किया है। उसने विमान और उसमें सवार व्यक्तियों के लिए मुआवजे की माँग की है।**

उपर्युक्त उद्धरण पर विचार करें तो हमें स्पष्ट दिखाई देता है कि लेखक ने बिना किसी उलझाव के बहुत सहज भाषा में अपनी बात कह दी है। यहाँ पाठक को किसी कल्पना में उलझाने की कोशिश नहीं दिखाई देती। शब्दों का प्रयोग भी सावधानी पूर्वक किया गया है ताकि पाठक को आशय समझने में कठिनाई न हो।

> **बुलंदियों पर पहुँचने से अधिक महत्वपूर्ण है बुलंदियों पर बने रहना। इस बात को लिएण्डर पेस और महेश भूपति की भारतीय जोड़ी ने पिछले कुछ समय से दुनिया में शीर्ष रैंकिंग पर**

बने रहकर साबित किया है। यह जोड़ी 1952 के बाद दुनिया की पहली ऐसी जोड़ी है जिसने वर्ष के चारों ग्रैंड स्लैम खिताबों के फाइनल में प्रवेश किया।

इस उदाहरण में हमें लेखन में वह विशेषता दिखाई देती है जिसे सरलता कहते हैं। यहाँ सरल भाषा में बिना किसी बनावट के सीधे शब्दों में अपनी बात कह दी गई है जिससे पाठक को समझने में किसी प्रकार की उलझन न हो। इसके साथ ही इसमें दोनों खिलाड़ियों की श्रेष्ठता भी उजागर हो गई है।

11.2.2 प्रत्यक्ष वार्तालाप शैली

इस शैली के अन्तर्गत लेखक की कोशिश यह होती है कि वह पाठक से सीधे बातचीत करते हुए दिखाई दे। इसी क्रम में वह (लेखक) पाठक के सामने अपना दृष्टिकोण भी प्रकट करने का प्रयत्न करता है। आख्यान की यह शैली आम तौर से प्रयोग में नहीं देखी जाती है। उदाहरण के लिए -

एक मध्यम वर्गीय भारतीय परिवार में माँ-बाप का एक मात्र, छोटा-मोटा-सा या बड़ा-सपना यही तो रहता है कि बच्चे पढ़-लिख लें, ठीक-ठाक डिग्री ले लें और किसी नौकरी में जम जाएँ। बँधा-बँधाया वेतन, फिर दहेज, फिर बहू-फिर बच्चे, नाती-पोतों की धिचपिच। सँकरी-सी ट्रेक पर भागते सपने। एक निरंतर बाधा दौड़। एक छोटा सा सपना और वह भी अधूरा-सा ही, साकार हो जाए, तो क्या कहने। कितनी बाधाएँ सपनों की टाँगों में उलझती हैं और कितने सपने लहूलुहान होकर दौड़ से ही बाहर हो जाया करते हैं।

x x x x x

परिवार बस टूटे हुए सपनों का मलबा बन कर रह गया है। घर के हर कोने में स्वप्न टूटे-फूटे पड़े हैं। वे, जिन्हें बड़े प्यार से सहेजा गया था कभी- अब धूल खा रहे हैं। इन स्वप्नों में सबसे ज्यादा स्वप्न वे हैं, जो जिज्जी ने कभी गुच्चन, लल्ला आदि के लिए देखे और सहेजे थे।

उपर्युक्त दोनो उद्धरणों में एक परिवार की ध्वस्त होती इच्छाओं को चित्रित करने का प्रयास दिखाई देता है।

परन्तु लेखक ने उस परिवार के टूटते सपनों को इस तरह बयान किया है जिससे लगता है कि वह सामने बैठे किसी व्यक्ति से बातें कर रहा हो। यहाँ उसकी आख्यान शैली बहुत प्रभावशाली रूप में उभरकर सामने आ गई है।

शिक्षा की बात आई है तो इस एक वर्ष में परिवार के शैक्षणिक विकास की बात भी कर ली जाए। 'विकास' शब्द पर आपको उज्र हो तो 'पतन' कह लीजिए। यूँ भी विकास और पतन मात्र सापेक्ष मूल्य हैं। जैसे 'स्कूल से निकाल दिया जाना' आपकी संकुचित दृष्टि में पतन हो सकता है, परन्तु वही घटना लल्ला की दृष्टि में विकास की राह में उठा उनका एक लम्बा कदम है।

इस कथन में आपको हल्का -सा व्यंग्य का आभास भी मिल जाएगा। मानो लेखक लल्ला और उनके जैसे नौजवानों की समूची पीढ़ी पर किसी के सामने अपना मंतव्य प्रकट कर रहा हो। यहाँ लेखक का मंतव्य भी स्पष्ट है।

पुलिया से उठते हुए अपने-अपने घर की दिशा में प्रस्थान करने से पूर्व लल्ला और फिरंगी के बीच तय हुआ कि जैसे ही कुछ पैसों का जुगाड़ हुआ, कारतूस खरीदे जाएँगे। और पास के जंगल में जाकर निशानेबाजी का अभ्यास किया जाएगा। दोनों के चले जाने के बाद खाली पड़ी पुलिया देर तक अकेलापन महसूस करती रही।

इस उदाहरण से हमें दो व्यक्तियों के बीच आपसी बातचीत का आभास मिल जाता है। इसके अलावा इस बातचीत में जो महत्वपूर्ण फैसले लिए गए, उसकी भी झलक मिल जाती है। इस तरह प्रत्यक्ष वार्तालाप में संबद्ध व्यक्ति एक-दूसरे के सामंजस्य से विचार-विनिमय को आगे बढ़ाते हैं।

11.2.3 तथ्यपरकता

आख्यान परक लेखन में तथ्य परकता का महत्वपूर्ण स्थान होता है। स्थान, समय और गतिविधियों के वर्णन से आख्यान को न केवल विकसित किया जा सकता है बल्कि उससे एक हद तक विश्वसनीयता भी आती है। 'हंस' के दिसम्बर 1999 अंक से एक उद्धरण -

शताब्दी के सबसे भयानक चक्रवात ने उड़ीसा को तबाह कर डाला। कल तक जो गाँव कस्बे थे आज वहाँ लहराती बाढ़ है - टूटे हुए पेड़, खम्भे, पशुओं-आदमियों की फूली-सड़ती लाशें, मकानों के मलबे और तांडव करती तूफानी हवाएँ। चार-पाँच दिन चलने वाले इस प्रलंयकारी चक्रवात ने गैर सरकारी आँकड़ों के हिसाब से लगभग एक लाख लोगों की बलि ली। हजारों गाँवों का नामों-निशान मिटा डाला।

उपर्युक्त अंश से हमें उड़ीसा में आए तूफान की भयंकरता का अनुमान मिल जाता है। लेखक ने शब्दों का चयन इस तरह किया है कि उससे तूफान के कारण होने वाली तबाही का चित्र हमारी आँखों के सामने तैरने लगता है। इसके अलावा इन शब्दों में लेखक की संवेदना को प्रकट करने की क्षमता भी स्पष्ट हो जाती है और जो दृश्य हमारे सामने उभरता है वह दुर्घटना की सच्चाई के प्रति हमें आश्वस्त भी करता है। 'हंस' के इसी अंक से एक और उदाहरण -

संवेदनहीनता की हालत जो यह है कि जब उड़ीसा मौत से जूझ रहा था तो सारा देश दीवालियाँ मना रहा - घर, बाज़ार, सड़के, चौराहे रोशनियों से जगमगा रहे थे, दुकानें खरीदारों से ठसाठस भरी थीं और दिन-रात पटाखों के धमाके दिन का चैन और रात की नींद हराम किए थे। लगता ही नहीं था कि इसी देश के एक हिस्से में लाखों लोगों की जिंदगियाँ धरती की स्लेट से पोंछी जा रही हैं।

इस उदाहरण में हालांकि लेखक की चिंता मुख्य रूप से उभरकर सामने आई है लेकिन इस पर गहराई से विचार करें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि इसमें जिन भावों और विचारों को पिरोया गया है वे अंतत: उसी तबाही का चित्र खींचते हैं जो पिछले दिनों उड़ीसा में हुई थी। यह अंश भी तथ्य को संवेदना के माध्यम से प्रस्तुत करता है। यहाँ हमें यह भी देखने को मिलता है कि उड़ीसा की उस भारी तबाही का हमारे मन पर कितना असर पड़ा है? यह हमारे सामाजिक लगाव और जिम्मेदारी की कमी को प्रकट करता है। इस तरह इस अंश में तूफान से हुई तबाही और उसके प्रति आम जनता की प्रतिक्रिया उजागर हो गई है। 'नवनीत' अक्टूबर 1999 से एक अंश -

'औद्योगिक' विकास के कारण संसार व्यापी प्राकृतिक सम्पदा का जो क्षय हुआ है, उससे पर्यावरण-प्रदूषण की जो समस्या उत्पन्न हुई है, उसके कारण अनेक जैवी एवं वानस्पतिक प्रजातियाँ नष्ट होती जा रही हैं। पर मनुष्य स्वयं भी अपनी प्रजाति के अतिरिक्त अन्य प्रजातियों को, अपने मजहब के अतिरिक्त अन्य मजहबों के अनुयायियों को, अपनी विचारधारा के अतिरिक्त अन्य विचारधाराओं के मानने वालों को, अपनी सभ्यता के अतिरिक्त अन्य सभ्यताओं को येन-केन प्रकारेण नष्ट करने पर तुला हुआ है।

उपर्युक्त उदाहरण में अनेक मानवीय चिंताओं को व्यक्त किया गया है। पर्यावरण-प्रदूषण से लेकर धर्म, विचारधारा और सभ्यता पर मंडराते संकट के केन्द्र में मनुष्य की स्वार्थी प्रवृत्ति को उत्तरदायी ठहराया गया है। यह एक घटना मात्र नहीं है बल्कि निरंतर होती जाने वाली घटनाओं पर लेखक की टिप्पणी है। इस टिप्पणी में लेखक की निजी भावानुभूति व्यक्त हुई है। भाव आख्यानपरक लेखन की प्रमुख विशेषता होते हैं।

11.2.4 वैयक्तिकता

वैयक्तिकता आख्यानपरक लेखन की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। इस शैली के प्रयोग से लेखक या वक्ता का व्यक्तिगत चरित्र उभर-कर सामने आ जाता है। इसमें इतने भारी और गंभीर शब्दों का प्रयोग होता है कि उससे हास्य बिखरने लगता है। जहाँ तक वैयक्तिकता का सवाल है, यह प्रत्येक लेखक की बिल्कुल निजी शैली होती है। उदाहरण के लिए ज्ञान चतुर्वेदी के उपन्यास 'बारामासी' का एक टुकड़ा उद्धृत है -

इधर गुच्चन समझ नहीं पा रहे थे कि लोग इंटर कैसे पास कर लेते हैं। इन पाँच वर्षों में उन्होंने देखा कि एक से एक खतियल लुच्चे-लफंगे लड़के तक इंटर करके निकल गए। कैसे किया जाता है इंटर पास ? क्यों नहीं हो पाते ? पाँच वर्षों में वे कितनी बार कितने विषयों में फेल हुए हैं, इसका हिसाब लगाने बैठते तो हिसाब के इस गणित में भी वे फेल ही होते। किले की ऊँची दीवार-सा सामने आ गया था इंटर और किले के भारी फाटक पर खतरनाक अनजाने प्रश्नों के अस्त्रों से लैस न जाने कितने विषय पहरा दे रहे थे। वे किस-किस से जूझते? वे अकेले और किले पर ऐसी भारी कुमुक। वे इधर एक विषय से भिड़ते, उसके गरदनिया देकर जमीन पर दचकते कि उधर पाँच विषय उन पर पीछे से चढ़ बैठते।

इसमें लेखक की हास्य-व्यंग्य शैली का स्पष्ट संकेत मिलता है। देशज भाषा के शब्दों का प्रयोग करके लेखक ने जहाँ व्यंग्य की धार को पैना बनाया है वहीं अनजाने ही हास्य की छटा बिखरने लगती है। इसी तरह का एक और उदाहरण इसी पुस्तक से प्रस्तुत है -

> **बूढ़ा जो बातें कर रहा था, वह बुंदेलखंड का मन बोल रहा था। यहाँ इज्जत के अपने मापदंड थे। यहाँ मर्डर अपराध नहीं था बल्कि बैरी से बदला लेकर जन्म सफल करने का साधन मात्र था। बुंदेलखंड में अपराध की अपनी निराली दुनिया और फिलॉसफी थी। हर अपराध के पीछे घनघोर आत्मसम्मान का भाव भी था। छुपकर चोट्टों की तरह अपराध करने को यहाँ घटियापन माना जाता था। यह भी कोई बात हुई कि चोरी-चोरी गए, और चोरी करके, चोरी-चोरी ही, चोरों की तरह ही वापस आ गए। यहाँ के चोर जब भी चोरी करने किसी के घर घुसे तो बिना गृहस्वामी के साथ माकूल मारपीट किए कभी बाहर नहीं निकले। चोरी करने निकले हैं तो क्या किसी के बाप का कर्जा काढ़ा है कि चले जा रहे हैं छुप छुपकर। अपराध को डंके की चोट पर करने पर जोर है। कायरोंवाला काम नहीं। डकैती डाली और जाते जाते छाती ठोंककर कहते गए कि थाने में अपने बाप से कह देना कि रामपुर के ध्यान सिंह ने वारदात करी है - उखाड़ ले, जो उखाड़ सके। यहाँ जनश्रुतियों और लोककथाओं के नायक वे ईमानदार तथा दिलेर डाकू रहे हैं, जो तिथि तथा समय की पूर्व चेतावनी देकर डाका डालते थे और सौ पुलिस वालों को भी चकमा देकर साफ निकल जाते थे।**

उपर्युक्त अंश में जिन शब्दों का प्रयोग किया गया है वे गंभीर तथा भारी इस अर्थ में लग सकते हैं कि उनको सीधे लोक-समाज से लिया गया है। ये पूरी तरह साहित्यिक नहीं हैं फिर भी इनके प्रयोग से न केवल उस स्थान विशेष के सामाजिक वातावरण का पता चलता है बल्कि ये लेखक की लोकरूचि और समाज से गहरे जुड़ाव का भी संकेत देते हैं। इसी बिन्दु पर हमें लेखक की निजता भी झलकती है और चरित्रों की मानसिकता उजागर हो जाती है। इस तरह वैयक्तिकता किसी भी लेखक की अपनी खास भाषा शैली होती है जिसमें वह हास्य, व्यंग्य और करूणा आदि भावों को व्यक्त करता है।

11.2.5 शैली

शैली का लेखन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान होता है। वैसे तो शैली को परिभाषित करना कठिन है फिर भी कुछ विद्वानों ने इसके विषय में अपने विचार व्यक्त किए हैं। स्विफ्ट के अनुसार -"समुचित स्थान पर सही शब्दों का प्रयोग ही शैली की सच्ची परिभाषा हो सकती है।" बफन के अनुसार - "मनुष्य अपने आप में शैली है।" चेस्टरफील्ड ने लिखा है कि, "शैली विचारों का परिधान (पहनावा) है।" ह्वाइटहेड का कहना है कि, "शैली मन की नैतिकता है।"

इस तरह स्विफ्ट की परिभाषा जहाँ बहुत उपयोगी और स्पष्ट प्रतीत होती है वहीं बफन यह कहना चाहते हैं कि जो कुछ हम लिखते हैं उससे हमारी अंतरात्मा का थोड़ा-बहुत हिस्सा अवश्य प्रकट होता है। ह्वाइटहेड की परिभाषा से यह स्पष्ट होता है कि शैली और लेखक के मन के बीच एक अटूट रिश्ता होता है। इस प्रकार शैली पाठक को लेखक के करीब लाने में सहायक होती है। यह व्यक्ति की मौलिक सूझ-बूझ से अलग चीज नहीं होती। जब हम कहते हैं कि अमुक व्यक्ति का लेखन बहुत खराब है तो इसका मतलब यह होता है कि उसके लिखने का तरीका पाठक के मन पर कोई ठोस प्रभाव डालने में सक्षम नहीं है। लेखक शब्दों, ध्वनियों और व्याकरण को व्यवस्थित रूप देने के लिए हमेशा अभ्यास करता है ताकि उसके लेखन का अभिप्राय स्पष्ट हो सके। इस तरह हम कह सकते हैं कि शैली के माध्यम से एक लेखक अपने कौशल में निरंतर निखार लाने की कोशिश करता है।

बोध प्रश्न-1

1. आख्यानपरक लेखन से क्या अभिप्राय है?

   .....

   .....

   .....

   .....

2. आख्यानपरक लेखन सरल क्यों होना चाहिए?

   .....

.....

.....

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

क) शैली.....को.....के करीब लाने में सहायक है।

ख) .....शैली आख्यानपरक लेखन में आम तौर से प्रयोग में कम लाई जाती है।

ग) .....शैली के प्रयोग से लेखक का व्यक्तिगत चरित्र उभर आता है।

11.3 आख्यानपरक रचना का लेखन

सभी तरह की रचनाएँ इसी बात को उजागर करती हैं कि हम किसी व्यक्ति, स्थान और घटना के बारे में क्या सोचते हैं ? घटनाएँ तो हमारे चारों तरफ घटती रहती हैं और व्यक्ति कहीं न कहीं उनमें हिस्सेदार भी होता है। लेकिन हम अपने लेखन के लिए उनमें से कुछ ही घटनाओं का चुनाव क्यों करते हैं ? क्योंकि हम जिनके बारे में सोचते हैं, उनको ही लेखन के लिए चुनते हैं। एक लेखक किसी आख्यान को लिखने से पहले अपने दिमाग में उसके बारे में स्पष्ट रूप रेखा बना लेता है। इस तरह आख्यान किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना के बारे में लेखक की सोच को प्रकट करता है जबकि वर्णन में लेखक किसी घटना का हूबहू वर्णन कर देता है।

11.3.1 विचार

हम केवल उसी चीज के बारे में लिख सकते हैं जिसका हमें अनुभव हो, जिसे हमने देखा हो और जिसके बारे में हमने कुछ सोचा हो। दूसरों के अनुभवों और विचारों के बारे में जब हम बात करते हैं तो वह हमारा निजी विचार नहीं होता। दूसरों से लिया गया विचार उसी तरह हमारा अपना नहीं हो सकता जैसे किसी दूसरे व्यक्ति का कपड़ा हमारी देह पर फ़िट नहीं बैठता। रुचिकर कहानी या आख्यान वही हो सकता है जिसे स्वयं लेखक ने निजी तौर पर अनुभव किया हों अथवा उसके बारे में सोचा हो। इसलिए आख्यान में मौलिकता आवश्यक और महत्वपूर्ण होती है। आख्यान के प्रमुख स्रोत हैं -

(i) **स्मृति** - इसमें अनेक बातें शामिल हैं। मसलन किन व्यक्तियों या स्थानों को आप स्पष्ट रूप से याद कर सकते हैं? किन दिनों को आप याद करते हैं? इनमें वह दिन भी हो सकता है जिस दिन आपको बेहद खुशी का अनुभव हुआ हो अथवा किसी दुख या पीड़ा से गुजरना पड़ा हो। इसमें उस दिन को भी याद करते हैं जब आपके परिवार, पड़ोसी या मुहल्ले में कोई अप्रिय घटना घट गई हो।

(ii) **मित्र और प्रिय स्थान** - इसमें आप देखते हैं कि किस व्यक्ति को आप बहुत अच्छी तरह जानते है ? अथवा किसने आपको बेहद प्रभावित किया है ? अथवा वह कौन-सा स्थान है जहाँ आप लौटकर दुबारा जाना चाहते हैं ? तो इस तरह कोई प्रिय व्यक्ति या स्थान आख्यान का विषय बन सकता है क्योंकि लेखक इनको बहुत करीब से जानता है और उनके बारे में सोच सकता है।

(iii) **घटनाएँ** - वे घटनाएँ, जिन्होंने आपके जीवन को झकझोर कर रख दिया हो, अथवा जीवन की महत्वपूर्ण उपलब्धि या निराशा भी आख्यान का विषय बन सकती है। इसमें वह व्यक्ति भी शामिल हो सकता है जिसकी सुंदरता, भलमनसाहत या शक्ति ने आपको प्रभावित किया हो।

(iv) **कल्पना और इच्छाएँ** - इनमें व्यक्ति से जुड़ी वे इच्छाएँ और कल्पनाएँ शामिल होती हैं जिनमें वह किसी व्यक्ति से मिलने के लिए बेहद आतुर दिखाई देता है या वह किसी स्थान या देश में रहने के लिए लालयित रहता है।

इस प्रकार आख्यान लेखन में व्यक्ति की इच्छा-आकांक्षाओं और अनुभवों का विशेष महत्व होता है।

उदाहरण

जिनको हम समझते हैं, व्यतीत हो गया; वह वास्तव में समाप्त नहीं हुआ। वह हमारे साथ जी रहा है। काव्य में भी यही है कि उसमें किसी देश की संस्कृति, उसकी धरती बोलती है, उसका आकाश बैंलता है।

(चिंतन के क्षण : महादेवी वर्मा) से उद्धृत

उपर्युक्त अंश में महादेवी ने कविता के बारे में अपना विचार व्यक्त किया है। चूँकि महादेवी हिन्दी की महत्वपूर्ण कवयित्री हैं इसलिए कविता के विषय में उनके द्वारा व्यक्त विचारों में मौलिकता आना स्वाभाविक है।

(i) **उस समय यह देखा मैंने कि साम्प्रदायिकता नहीं थी। जो अवध की लड़कियाँ थीं, वे आपस में अवधी बोलती थीं; बुंदेलखण्ड की आती थी; वे बुंदेली में बोलती थीं। कोई अंतर नहीं आता था और हम पढ़ते हिन्दी थे। उर्दू भी हमको पढ़ाई जाती थी, परन्तु आपस में हम अपनी भाषा ही बोलती थीं। यह बहुत बड़ी बात थी। हम एक मेस में खाते थे, एक प्रार्थना में खड़े होते थे; कोई विवाद नहीं होता था।**

(चिंतन के क्षण - महादेवी वर्मा)

यहाँ लेखिका स्मृति के सहारे अतीत के उन क्षणों को याद करती है जो अनेकता में एकता का आदर्श प्रस्तुत करते थे। इस अंश में सामाजिक-राजनीतिक बदलाव की प्रवृत्तियों की भी झलक मिलती है।

(ii) **अरैल जाने के दो मार्ग थे - एक बाँध के नीचे किले के पास पहुँचकर नाव से यमुना पार करनी पड़ती थी और दूसरे में यमुना पुल पार कर नैनी होते हुए जाना पड़ता था। नैनी के मार्ग में पहले कुछ मुस्लिम बस्ती थी फिर मल्लाहों के घर थे और फिर पंडों के। मैं इसी स्थल मार्ग से जाती थी, क्योंकि उसमें सब प्रकार के व्यक्तियों से सहज सम्पर्क था"**

(चिंतन के क्षण - महादेवी वर्मा)

उपर्युक्त उदाहरण में महादेवी वर्मा की जन साधारण से आत्मीय लगाव की झलक मिलती है। साथ ही उस स्थान के प्रति उनके मन का आकर्षण भी उजागर हो जाता है।

(iii) **लाठी - फरसे लिए हुए कई मल्लाह ताँगे के पास आ गए थे, पर करमू मियाँ तब भी शांत बैठे हुए थे। लगता था मानो मृत्यु से साक्षात्कार भी उनके लिए नित्य की सामान्य घटना थी। जब आक्रमणकारियों से कहा गया कि उस बूढ़े निहत्थे व्यक्ति ने उन्हीं के बीमार बच्चों तक दवा, पथ्य आदि पहुँचाने के लिए यह खतरा मोल लिया है, तब उनमें से कई संकुचित हो गए। सामान उन्हीं को सौंपकर हम उस दिन स्तब्ध स्थिति में घर लौटे।**

(चिंतन के क्षण - महादेवी वर्मा)

उक्त अंश में जिस घटना का वर्णन किया है उसमें करमू मियाँ की भलमनसाहत स्पष्ट उजागर हो गई है।

(iv) **"वातावरण" ऐसा था उस समय कि हम लोग बहुत निकट थे। आज की स्थिति देखकर लगता है, जैसे वह सपना ही था। आज वह सपना खो गया शायद वह सपना खो जाता तो भारत की कथा कुछ और होती।"**

(चिंतन के क्षण - महादेवी वर्मा)

यहाँ लेखिका ने बचपन की स्मृतियों के बहाने मेल - मिलाप की संस्कृति के प्रति मन का प्रेम व्यक्त किया है। बचपन का वातावरण उसकी इच्छा में अब भी उतरता है और एक सुन्दर भविष्य का निर्माण करना चाहता है।

एक अन्य उदाहरण, जिसमें महादेवी वर्मा के कवि हृदय और उन्मुक्त चेतना का परिचय मिलता है -

सबरे के पुलक पंखी वैतालिक एक लयवती उड़ान में अपने-अपने नीड़ों की ओर लौट रहे थे। विरल बादलों के अंतराल से उन पर चलाए हुए सूर्य के सोने शब्दबेधी बाण उनकी उन्मद गति में ही उलझकर लक्ष्य-भ्रष्ट हो रहे थे।

(चिंतन के क्षण - महादेवी वर्मा)

11.3.2 विषय का चुनाव

जो चीजें निजी अनुभव, विचार और पर्यवेक्षण का हिस्सा होती हैं, उन्हीं को आख्यान का विषय बनाया जा सकता है। जिनके बारे में हमें थोड़ी- बहुत जानकारी होती है उनको आधार बनाकर किया गया लेखन ही वास्तव में रोचक और प्रभावशाली हो सकता है। क्योंकि उनके बारे में लेखक खुद का विचार भी व्यक्त करता है।

11.3.3 विषय का विकास

जब हम किसी विषय का चुनाव कर लेते हैं तब हमारे सामने दूसरी समस्या यह होती है कि हम उस विषय के साथ एक लेखक के रूप में व्यवहार कैसे करें। जब एक बार हम इसका निश्चय कर लेते हैं

तब हमें उस विषय के अनुरूप सामग्री जुटाना आसान हो जाता है। किसी विषय के साथ लेखक के व्यवहार का मतलब है उस विषय के विकास से सम्बन्धित योजना तैयार करना। क्योंकि बिना योजना के कोई लेखन संभव नहीं होता। प्रत्येक आख्यान एक तरह से पाठक से संवाद होता है और संवाद के लिए जरूरी है कि वह विचार, भावना और तथ्य पर आधारित हो। कोई भी आख्यान लिखने से पहले लेखक के दिमाग में एक विचार कौंधता है जिसे वह बाद में विकसित करता है।

11.3.4 विषय-सामग्री की खोज

विषय का चयन और उसके विकास की दिशा निश्चित कर लेने के बाद लेखक को उस सामग्री की खोज करनी पड़ती है जो उसके लेखन को पुष्ट कर सके। वैयक्तिक और आत्मनिष्ठ अथवा अवैयक्तिक एवं वस्तुनिष्ठ - ये दो मुख्य स्रोत हैं, जिनके आधार पर आख्यान को विकसित और पुष्ट किया जा सकता है। व्यक्तिपरकता लेखन में मानवीय संवेदना का संचार करती है। साथ ही इससे पाठक का ध्यान आकृष्ट करने में भी आसानी होती है। सच तो यह है कि बहुत बड़ी संख्या में तथ्यों का संकलन कर भी लिया जाए तो भी वह व्यक्ति के विचार और कल्पना की बराबरी नहीं कर सकता है क्योंकि तथ्यों में निजीपन की अनुभूति कराने की क्षमता नहीं होती, जो एक आख्यान के लिए आवश्यक होती है।

इसके अलावा इसमें लेखक का पर्यवेक्षण भी महत्वपूर्ण होता है। इससे हम न केवल दो वस्तुओं अथवा व्यक्तियों के बीच अंतर कर पाते हैं, बल्कि पर्यवेक्षण व्यक्ति या वस्तु की चारित्रिक पहचान करने की दृष्टि भी देता है। इसलिए आख्यान के लिए सूक्ष्म पर्यवेक्षण बहुत ही आवश्यक है।

उदाहरण के लिए रामदरश मिश्र की आत्मकथा 'सहचर है समय' का एक अंश -

> **एक कवि थे चंचरीक। ये गोरखपुर के थे। ये लोक-कवि थे। गोरखपुर में इनका नाम सुन रखा था। एक दिन किसी कवि-सम्मेलन में भेंट हो गई। उन दिनों मेरी एक कविता 'आँखें' बहुत प्रसिद्ध हुई थी - 'इनका संसार निराला है, उनकी अनजान कहानी है' पंक्ति बहुतों की जुबान पर उतर आई थी। चंचरीक जी ने यह कविता सुनी। मुझसे बातचीत की और पता नोट किया। एक दिन छात्रावास में आ गए। मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। वे 'अप्सरा' नाम की एक पत्रिका निकालते थे, उसके लिए उन्होंने मेरी 'आँखें' कविता माँगी। मेरे लिए इससे अधिक खुशी की बात क्या होती ? अप्सरा के दो एक अंक निकल चुके थे, बहुत भव्य अंक थे। चंचरीक जी बहुत जीवट के व्यक्ति थे। वे अप्सरा के लिए वेश्याओं से पैसे उगाहते थे और उनकी समस्या सम्बन्धी सामग्री भी उसमें देते थे। वे निस्संकोच भाव से उनके कोठे पर जाते थे, उनका दुःख-दर्द सुनते थे। संभ्रांत साहित्यकारों के समाज में उनका आना जाना कम था, जनता के बीच ही वे आते-जाते थे। लोक कवि थे, लोक-कविताएँ एकत्र करते थे। वे गोरखपुर के एक निर्धन परिवार के थे, जाति से भी बहुत ऊँचे नहीं थे, इसलिए उनमें बड़प्पन का कोई छद्म नहीं था। उनसे मिलकर मुझे बहुत प्रसन्नता होती थी।**

उपर्युक्त आख्यान में लेखक ने स्मृति के सहारे व्यक्ति के व्यक्तित्व को गहराई से उतारने की कोशिश है। यहाँ हम देखते हैं कि लेखक ने कवि चंचरीक से भेंट होने और उनके द्वारा मनोयोग पूर्वक पत्रिका निकालने की प्रशंसा करते हुए अपनी खुशी भी जाहिर की है। यह खुशी और प्रशंसात्मक टिप्पणी लेखक के निजी भावों का उद्‌गार है। आख्यानपरक लेखन में इस शैली का बहुत महत्व है। इसमें लेखक ने कवि चंचरीक के मानवीय पक्ष को बहुत ही संवेदना के साथ उभारने की कोशिश की है। इसलिए वर्णित व्यक्ति का समूचा व्यक्तित्व हमें प्रभावित भी करता है।

एक और उदाहरण अमृता प्रीतम की आत्मकथा 'रसीदी टिकट' से प्रस्तुत है -

> **कुछ घटनाएँ बहुत ही थोड़े समय के बाद रचना का अंग बन जाती हैं, पर कुछ घटनाओं को कलम तक पहुँचने के लिए बरसों का फासला तय करना पड़ता है। पहली तरह की घटनाओं में मुझे एक याद है जब मैं 1960 में नेपाल गई थी। लगभग पाँच दिन तक रोज शाम के समय किसी न किसी बैठक में कवि सम्मेलन होता था, जहाँ कुछ नेपाली कवि रोज मिल जाते थे। उनमें एक कवि थे चढ़ती जवानी में, किंतु बहुत ही गंभीर स्वभाव के। मैंने केवल इतना ही जाना था कि वह रोज धीरे से मेरी एक खास कविता की फरमाइश**

अवश्य करते थे, इससे ज्यादा कुछ नहीं। पर जिस दिन वापस दिल्ली आना था, और कई कवियों के साथ वह एयरपोर्ट आए थे, और संयोग था कि उस दिन प्लेन एक घंटे लेट था, प्रतीक्षा के सारे समय में वह मेरा भारी गर्म कोट उठाए रहे। फिर प्लेन के आने पर जब मैं उनसे कोट लेने लगी, तो उन्होंने धीरे से कहा - यह जो भार दिखाई देता है यह तो आप लीजिए, जो नहीं दिखाई देता वह मैं लिए रहूँगा।' और मैं बस चौंक - सी गई थी। दिल्ली पहुँचकर एक कहानी लिखी 'हुंकारा' - उनके बारे में नहीं, पर यह वाक्य अनायास ही उस कहानी में आ गया।

उपर्युक्त अंश में लेखिका ने उस नेपाली कवि का ऐसा आख्यान प्रस्तुत किया है जिसमें उनका व्यक्तित्व झलकने लगता है। नेपाली कवि के मान में लेखिका के प्रति प्रेम का जो अंकुर फूटा था उसे बहुत ही ईमानदारी और सहानुभूति के साथ चित्रित किया गया है। इसलिए हमें यह कहने में कोई कठिनाई नहीं महसूस होनी चाहिए कि आख्यान परक लेखन किसी व्यक्ति या वस्तु के बाह्य रूप का रेखांकन नहीं है बल्कि यह उसके आंतरिक गुणों या विशेषताओं का अनुभूतिपरक वर्णन है। अमृता प्रीतम के उपर्युक्त शब्द हमें इसका प्रमाण देते हैं। लेखिका ने नेपाली कवि के भावोच्छ्वास पर स्तब्ध होते हुए उनका ऐसा चित्र प्रस्तुत किया है जिससे उस नेपाली कवि के बारे में पाठक के मन में कोई विकार या बुरा भाव नहीं प्रकट होता बल्कि वह (पाठक) उस भावोद्गार को एक संवेदन शील सौन्दर्य प्रेमी व्यक्ति के सहज आकर्षण का परिणाम मान लेता है।

एक जीवन-प्रसंग 'नवनीत' अक्टूबर 1999 से -

एक दिसम्बर 1985 को बाथम ने अपनी पद यात्रा पूरी कर ली। उसने तब अटलांटिक महासागर में कूदकर यह संकेत दिया कि वह ब्रिटेन की लम्बाई के बराबर दूरी तय कर चुका है तथा इसके आगे कोई भूखण्ड नहीं रह गया है। वह कोई 10 मिनट तक समुद्र की छाती पर तैरता रहा। वहाँ उसके हजारों प्रशंसकों ने उसका तालियों की गड़गड़ाहट के साथ स्वागत किया।

x x x

वह मुस्कराकर बोला था - इस पद् यात्रा से सिर्फ धन ही नहीं जुटा उनके लिए। मैंने अपने देश के लोगों को, उन उपेक्षितों के प्रति उनका दायित्व क्या है, यह भी बतलाने में कुछ सफलता अर्जित की। उनकी समस्याएँ सिर्फ धन या साधन जुटाने मात्र से नहीं, उन्हें भरपूर स्नेह और अपनत्व देकर ही पूरी की जा सकती हैं। मेरी यह पद् यात्रा इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उठाया गया कदम था।"

(विवेक भारती)

इस उदाहरण के पहले खण्ड में लेखक ने बाथम के चरित्र का वस्तुपरक वर्णन करते हुए उसके साहस की प्रशंसा की है। जबकि दूसरे खण्ड में उसका वर्णन आत्मपरक हो गया है जिसमें मानवीय संवेदना का स्पर्श प्रबल है। यह चित्रण पाठक को अपनी ओर आकर्षित करने में इसलिए भी सफल होगा क्योंकि इसमें एक साहसी व्यक्ति की यात्रा का सार्थक एवं सोद्देश्य वर्णन किया गया है जो पाठक के मन को छूने और उसमें प्रेरण जगाने में भी सक्षम है।

बोध प्रश्न-2

1. आख्यान के प्रमुख स्रोत कौन-कौन से हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2. निम्नलिखित के उत्तर हाँ या नहीं में दीजिए :

क) निजी अनुभवों एवं विचारों को ही आख्यान का विषय बनाया जा सकता है। ( )

ख) लेखक का पर्यवेक्षण किसी व्यक्ति या वस्तु की चारित्रिक पहचान करने को दृष्टि देता है। ( )

ग) हम जिनके बारे में सोचते हैं, उन्हें लेखन के लिए कभी नहीं चुनते। ( )

11.4 सारांश

आख्यानपरक लेखन के बारे में अब तक जो विवेचन किया गया है उसके आधार पर हम कह सकते हैं कि आख्यान किसी वस्तु या व्यक्ति या घटना का हूबहू वर्णन नहीं है बल्कि इसमें वस्तु, व्यक्ति या घटना के विषय में लेखन की भावना भी प्रकट होती है। इसलिए आख्यानपरक लेखन में एक तरह की निजता का भाव निहित होता है। इसमें व्यक्ति या घटना से सम्बन्धित स्मृतियाँ, कल्पना और इच्छाएँ अभिव्यक्त होती हैं। मान लीजिए, हम किसी व्यक्ति को देखकर कहते हैं कि यह व्यक्ति काला बदसूरत और लम्बी नाक वाला है लेकिन बहुत भला है। यहाँ उसी काली सूरत और लम्बी नाक तो उस व्यक्ति के बारे में यथास्थिति की जानकारी देते हैं लेकिन भला होना उसके चेहरे पर कहीं नहीं लिखा है फिर भी लेखक उसे भला कहता है जिसका आधार उसका लेखक का सूक्ष्म पर्यवेक्षण है जिसके माध्यम से उसने व्यक्ति के बाहरी और भीतरी सौन्दर्य को परखने की कोशिश की। यह कहना गलत नहीं होगा कि व्यक्ति की भलमनसाहत ने ही लेखक का ध्यान उसकी ओर खींचा होगा और आख्यान लिखने की ओर प्रेरित किया होगा। इसी तरह दैनिक जीवन में घटने वाली अनेक घटनाओं में से लेखक कोई खास घटना ही चुनता है। निश्चित रूप से इस घटना से उसने कोई लगाव महसूस किया होगा। लेखक हमेशा ज्ञात व्यक्तियों या घटनाओं को आख्यान का विषय बनाता है क्योंकि इनके बारे में अपनी भावना को व्यक्त करना उसके लिए आसान होता है। आख्यान परक लेखन में सीधी, सरल और आत्मीय भाषा - शैली का प्रयोग किया जाता है। जीवनी, आत्मकथा और उपन्यासों के अलावा समाचार पत्रों में ऐसी ही भाषा का प्रयोग आम तौर से किया जाता है।

11.5 शब्दावली

पर्यवेक्षण - किसी वस्तु को गहराई से देखना
अभिव्यक्ति - भावों या विचारों को प्रकट करना
जीवट - साहस
भावोद्‌गार - भाव को प्रकट करना

11.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1. आख्यानपरक लेखन में लेखक चरित्रों के विकास और स्थितियों का वर्णन करते समय सच्चाई को भी उद्‌घाटित करता चलता है। इस लेखन में निजी ज़िन्दगी के साथ समाज की व्यापक ज़िन्दगी के चित्र भी अंकित होते हैं।

2. सरलता आख्यानपरक लेखन का आवश्यक गुण है। इससे पाठक विषय को बिना किसी उलझन के समझ सकता है। लेखक को भी अपना मंतव्य स्पष्ट करने के लिए कल्पना या बनावट का सहारा नहीं लेना पड़ता।

3. क) पाठक, लेखक ख) प्रत्यक्ष वार्तालाप ग) वैयक्तिक

बोध प्रश्न-2

1. (i) स्मृति
   (ii) मित्र और प्रिय स्थान
   (iii) जीवन को प्रभावित करने वाली घटनाएँ
   (iv) व्यक्ति से जुड़ी कल्पना एवं इच्छाएँ। अधिक जानकारी के लिए देखिए 11.3.1।

2. (क) हाँ (ख) हाँ (ग) नहीं